मौखिकः

निम्नलिखिताः उत्सवाः कस्मिन् भारतीये मासे आयोज्यन्ते ?

1. (क) होलिकोत्सवः – फाल्गुने
(ख) सरस्वतीपूजनम् – माघे
(ग) रक्षाबन्धनम् – श्रावणे
(घ) सूर्य षष्ठी (छठव्रतः) – कार्तिके
(ङ) दुर्गापूजा – आश्विने

2. प्रदूषणविषये पञ्च वाक्यानि वदत ।

उत्तराणि–वर्षाकाल में बढ़े हुए कीट-पतंगों का पहले तेल की बती से विनाश होता था। उनसे वातावरण शुद्ध होता था। आज तो हमलोग मोमबत्ती और विद्युतदीपों का प्रयोग करते हैं। उल्लास प्रकट करने के लिए पटाखे चलाते हैं। इनसे वातावरण में दूषित पदार्थ बढ़ते हैं। कीड़े नहीं नष्ट होते हैं। वातावरण विषयुक्त हो जाता है। ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ता है। अतः सावध न होना चाहिए। अपनी रक्षा के लिए पर्यावरण की रक्षा करना श्रेष्ठ कर्त्तव्य है।

3. दशभारतीयभाषाणां नामानि वदत ।

उत्तराणि– हिन्दी, मैथिली, भोजपुरी, मगही, बंगाली, मराठी, पंजाबी, तमिल, तेलगू, राजस्थानी ।

4. मञ्जूषातः शब्दं चित्वा रिक्तस्थनानि पूरयत –

भ्रमराः, राष्ट्रगानं, पठामः, संस्कृतस्य, रावणं

(क) रामचन्द्रः .... हतवान् ।
(ख) वयं सप्तमवर्गे .... ।
(ग) फातिमा .... गायति ।
(घ) .... उद्यानेषु भ्रमन्ति ।
(ङ) कालिदासः .... महाकविः आसीत् ।

उत्तराणि–(क) रावणं, (ख) पठामः, (ग) राष्ट्रगानं, (घ) भ्रमराः, (ङ) संस्कृतस्य ।

5. **रिक्तस्थानानि पूरयत –**

(क)	कपाट:	कपाटायाम्	....
	लतया	....	लताभि:
	लतायाम्	....	....
	....	कक्षयो:	कक्षासु
	गृहस्य	....	....
(ख)	पठतु	....	पठन्तु
	....	पठतम्	....
	पठानि	....	....

उत्तराणि–

(क)	कपाट:	कपाटायाम्	कपाटै:
	लतया	लताभ्याम्	लताभि:
	लतायाम्	लतयो:	लतासुह
	कक्षायाम्	कक्षयो:	कक्षासु
	गृहस्य	गृहयो:	गृहाणाम्
(ख)	पठतु	पठताम्	पठन्तु
	पठ	पठतम्	पठत
	पठानि	पठाव	पठाम

6. **संस्कृतभाषायाम् उत्तराणि लिखत –**

(क) दीपोत्सव: कस्मिन् मासे भवति ?
(ख) जना: सुधया कानि लिम्पन्ति ?
(ग) बाला: किं किं लब्ध्वा प्रसीदन्ति ?
(घ) त्वं कस्मिन् वर्गे पठसि ?
(ङ) तव विद्यालये कियन्त: प्रकोष्ठा: सन्ति ?
(च) अधुना पर्यावरणं कीदृशम् अस्ति ?
(छ) घर्षणेन का दहति ?

उत्तराणि–(क) दीपोत्सवः अश्विने मासे भवति ।

(ख) जनाः सुधया गृहाणि लिम्पन्ति ।

(ग) बालाः नववस्त्रं मिष्टान्नञ्च लब्ध्वा प्रसीदन्ति ।

(घ) अहं सप्तमे वर्गे पठसि ।

(ङ) तव विद्यालये एकादशः प्रकोष्ठाः सन्ति ।

(च) अधुना पर्यावरणं प्रदूषितं अस्ति ।

(छ) घर्षणेन अग्निशलाका दहति ।

7. रिक्तस्थानानि पूरयत –

इदं, अयं, इयं, सः, सा, तत्

(क) (i) .... पुस्तकम् ।

(ii) .... पुस्तकम् ।

(iii) .... बालकः ।

(iv) .... बालकः ।

(v) .... लेखनी ।

(vi) .... लेखनी ।

(ख) (i) अस्य .... । बालकस्य / बालकयोः ।

(ii) तस्मिन् .... । विद्यालये / विद्यालयस्य ।

(iii) .... पर्वणि । अस्य / अस्मिन् ।

(iv) तस्मै .... । बालकेन / बालकाय ।

(v) .... वर्गात् । कस्मात् / केभ्यः ।

(vi) .... कक्षायाम् । तस्यां / तस्मिन् ।

उत्तराणि–

(क) (i) तत् पुस्तकम् । (ii) इदं पुस्तकम् ।

(iii) अयं बालकः । (iv) सः बालकः ।

(v) सा लेखनी । (vi) इयं लेखनी ।

(ख) (i) अस्य बालकस्य । (ii) तस्मिन् विद्यालये ।

(iii) अस्मिन् पर्वणि । (iv) तस्मै बालकाय ।
(v) कस्मात् वर्गात् । (vi) तस्यां कक्षायाम् ।

8. **वर्गप्रहेलीतः धातुरूपं निस्सारयत –**

ति	प	ठ	थः	न्ति	मः
प	ठ	सि	प	ठा	मि
ठ	ति	प	ठ	थ	प
न्ति	प	ठ	तः	ठा	ठा
प	ठा	मः	प	मः	वः

उत्तराणि–

पठति	पठतः	पठन्ति ।
पठसि	पठथः	पठथ
पठामि	पठावः	पठामः

9. **हिन्द्याम् अनुवदत –**

(क) अस्माकं देशे बहवः समारोहाः भवन्ति ।

....

(ख) भारतस्य संस्कृतिः प्राचीना समृद्धा चास्ति ।

....

(ग) नार्यः यत्र पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

....

(घ) सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् ।

....

(ङ) पाण्डवाः पञ्च भ्रातरः आसन् ।

....

उत्तराणि–

(क) अस्माकं देशे बहवः समारोहाः भवन्ति ।
हमारे देश में अनेक समारोह होते हैं ।

(ख) भारतस्य संस्कृतिः प्राचीना समृद्धा चास्ति ।
भारत की संस्कृति प्राचीन और समृद्ध है ।

(ग) नार्यः यत्र पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता है ।

(घ) सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् ।
सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए ।

(ङ) पाण्डवाः पञ्च भ्रातरः आसन् ।
पाण्डव पाँच भाई थे ।

10. 'दुर्गापूजा' पर्व का वर्णन करें ।

उत्तराणि—दुर्गापूजा का पर्व आसुरी प्रवृत्तियों पर दैवी प्रवृत्तियों की विजय का पर्व है । प्रत्येक व्यक्ति के भीतर राम और रावण (सत और असत) की अलग-अलग प्रवृत्तियाँ हैं । इन दो अलग प्रवृत्तियों में निरंतर संघर्ष चलता रहता है । हम दुर्गापूजा इसीलिए मनाते हैं कि हम हमेशा अपनी सद्प्रवृत्तियों से असद्प्रवृत्तियों को मारते रहें । दुर्गापूजा को 'दशहरा' भी कहा जाता है; क्योंकि राम ने दस सिरवाले रावण (दशशीश) को मारा था ।

दुर्गापूजा का महान् पर्व लगातार दस दिनों तक मनाया जाता है । आश्विन शुक्ल प्रतिपदा (प्रथमा तिथि) को कलश-स्थापना होती है और उसी दिन से पूजा प्रारंभ हो जाती है । दुर्गा की प्रतिमा में सप्तमी को प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है । उस दिन से नवमी तक माँ दुर्गा की पूजा-अर्चना विधिपूर्वक की जाती है । श्रद्धालु प्रतिपदा से नवमी तक 'दुर्गासप्तशती' या 'रामचरितमानस' का पाठ करते हैं । कुछ लोग 'गीता' का भी पाठ करते हैं । कुछ श्रद्धालु हिंदू भक्त नौ दिनों तक 'निर्जल उपवास' करते हैं और अपने साधनात्मक चमत्कार से लोगों को अभिभूत कर देते हैं । सप्तमी से नवमी तक खूब चहल-पहल रहती है । देहातों की अपेक्षा शहरों में विशेष

चहल-पहल होती है। लोग झुंड बाँध-बाँधकर मेला देखने जाते हैं। शहरों में बिजली की रोशनी में प्रतिमाओं की शोभा और निखर जाती है। विभिन्न पूजा-समितियों की ओर से इन तीन रातों में गीत, संगीत और नाटकों के विभिन्न रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। शहरों की कुछ समितियाँ इस ‍त्रसर पर 'व्यंग्य और क्रीड़ामूर्त्तियों' की स्थापना करती हैं। इस दिन लोग अच्छा-अच्छा भोजन करते हैं और नए वस्त्र धारण करते हैं। इस दिन नीलकंठ (चिड़िया) का दर्शन शुभ माना जाता है।

11. निम्नलिखितानां समानार्थकशब्दानां मेलनं कुरुत -

(क)	रावणः	–	(i)	राघवः
(ख)	रामचन्द्रः	–	(ii)	दीपावली
(ग)	दीपोत्सवः	–	(iii)	श्रीः
(घ)	लक्ष्मीः	–	(iv)	सदनम्
(ङ)	गृहम्	–	(v)	दशाननः

उत्तराणि–(क)—(v), (ख)—(i), (ग)—(ii), (घ)—(iii), (ङ)—(iv)।